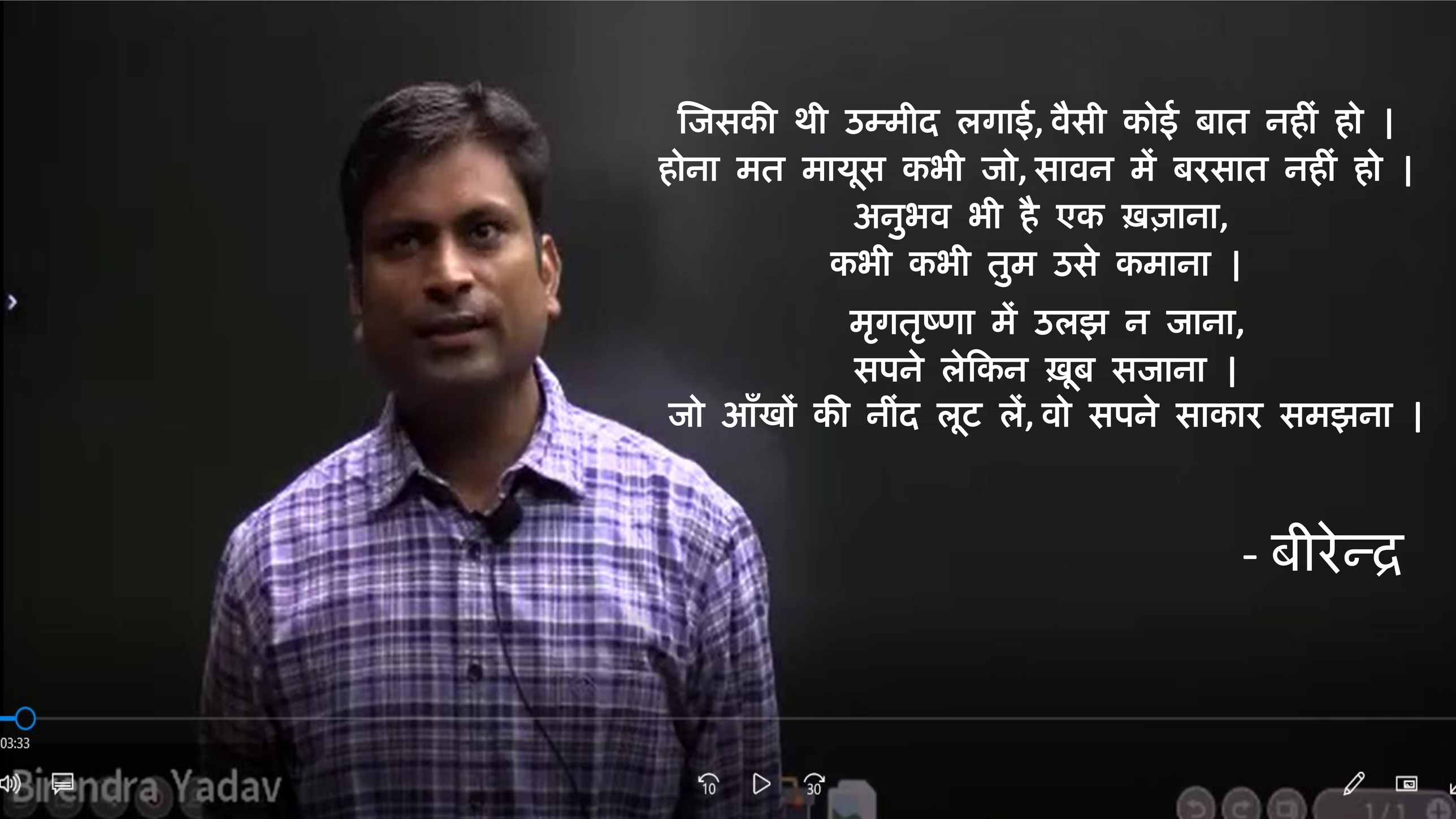
जिसकी थी उम्मीद लगाई, वैसी कोई बात नहीं हो ।
होना मत मायूस कभी जो, सावन में बरसात नहीं हो ।
अनुभव भी है एक ख़ज़ाना,
कभी कभी तुम उसे कमाना ।
मृगतृष्णा में उलझ न जाना,
सपने लेकिन ख़ूब सजाना ।
जो आँखों की नींद लूट लें, वो सपने साकार समझना ।
- बीरेन्द्र
03:33
Birendra Yadav